ग्वालियर घराने की अल्पप्रचलित गायन शैलियों का अध्ययन

संगीत विषय में पीएच.डी. की आंशिक पूर्ति हेतु प्रस्तुत शोध प्रबन्ध की

प्रस्तावित रूपरेखा

शोधकत्री

रश्मि पाल

शोध- निर्देशक

डॉ. गौतम तिवारी

संगीत-विभाग (गायन)

संगीत-विभाग, कला-संकाय

दयालबाग, एजुकेशनल इन्स्टीट्यूट (डीम्ड विश्वविद्यालय)

दयालबाग, आगरा - 282005

2022

भूमिका:-

भारतीय परंपरा के प्रायः सभी आदि ग्रन्थों में संगीत का सदैव महत्वपूर्ण और उच्च स्थान रहा है। वेदों, उपनिषदों, शिक्षा ग्रन्थों, ब्राह्मण ग्रन्थों आदि में संगीत की सभी विधाओं से संबंधित प्रचुर उल्लेख प्राप्त होते हैं। जो यह स्पष्ट करते है कि उस काल से ही भारतीय संगीत कितना समृद्ध और परिष्कृत रहा है। संगीत के भिन्न स्वरूप, गायन शैलियों के प्रकार, राग-रागिनियों का विवरण, विविध तालों का प्रयोग भारतीय संगीत की विशेषता रही है। इन प्रयोगों के साथ ही विभिन्न परम्पराओं और घरानों की विलक्षणता ने भी भारतीय संगीत को कई आयाम प्रदान किये जिनके आधार पर भारतीय संगीत का बहुमुखी विकास संभव हो पाया।

भारतीय संगीत गीत प्रधान है। गायन के अतिरिक्त नृत्य और वादन के अपने पूर्णतः मुक्त एकल स्वरूप होने पर भी वे कहीं न कहीं गायन से प्रभावित और आश्रित रहते हैं। भारतीय संगीत की विकास की श्रृंखला में हमें गीत के अनेक प्रकार प्राप्त होते हैं यथा प्रबंध, ध्रुपद-धमार, ख्याल, ठुमरी, टप्पा, दादरा आदि। ये विभिन्न गीत प्रकार कलाकारों की सांगीतिक स्वतंत्रता को दिशा प्रदान करने मे कारगर सिद्ध हुये। ये गीत प्रकार तत्कालीन प्रचलित गीतों में ही अन्य किसी गायन शैली के प्रभाव से उदित होते रहे। उदाहरण के लिए ध्रुपद में कव्वाली के तत्वों को आरोपित कर ख्याल का जन्म हुआ जिसमें ध्रुपद के विपरीत आलाप, स्वरों के त्वरित चलन, सरगम, तान आदि की विपुल संभावनायें थीं। इसी प्रकार रागों के नियमों को शामिल करने और मुख्य रूप से श्रृंगार रस की अभिव्यक्ति करने के लिये लोक संगीत के समावेश से ठुमरी और दादरा गायन शैलियों का उदय हुआ।

शास्त्रीय संगीत में ख्याल आधुनिक काल की सर्वाधिक लोकप्रिय गायन शैली मानी जाती है। ख्याल की उत्पत्ति के विषय में यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि इसका जन्म ध्रुपद से हुआ है। विलम्बित ख्याल के प्रारम्भिक काल में इसकी लय और विस्तार का ढंग किंचित ध्रुपद जैसा ही था। आगे चलकर भिन्न-भिन्न घरानों ने इसे अपनी गायकी के अनुसार परिवर्तित कर विकसित किया है। ख्याल गायन के ग्वालियर घराने में विलम्बित ख्याल की कुछ रचनाये ऐसी मिलती हैं जो ध्रुपद सद्रश प्रतीत होती हैं। इनके विस्तार में ध्रुपद जैसा ठहराव वैभव और गम्भीरता नहीं थी। कुछ ध्रुपद की बंदिशे तो ख्याल के रूप में गाई भी जाती हैं इसलिए इन्हें मुण्डी ध्रुपद कहा जाने लगा। इसी घराने के विद्वानों ने टप्पा गायन शैली को अपनी मुख्य धारा में सम्मिलित कर उसे विशेष स्थान दिया। इन विद्वानों ने टप्पे से प्रेरणा लेकर टप्पख्याल नामक एक विलम्बित ख्याल सदृश गायन शैली को जन्म दिया। ग्वालियर की गायकी में तराना गायन का भी विशेष स्थान रहा है। ग्वालियर घराने के विद्वान कलाकारों ने तराना और विलम्बित ख्याल के

सम्मिश्रण से ख्यालनुमा नामक एक गायन शैली को विकसित किया। बंदिश की चाल, उसकी स्वराकृति और उसके बोलों के अनुसार ही उसका विस्तार ग्वालियर घराने की गायकी की विशेषता रही है। अतः यह निश्चित ही है कि विलंबित ख्याल सदृश इन बंदिश प्रकारों की गायन और विस्तार की प्रक्रिया भी सामान्य विलंबित ख्यालों से भिन्न होगी। वर्तमान काल में इन गायन शैलियों को गाने वाले कलाकार नगण्य है। इन शैलियों की लोकप्रियता के कम होने के अनेक कारण हो सकते हैं।

पी.एच.डी. हेतु कोर्स वर्क के लिए शोधकत्री ने जब लघु शोध की रूपरेखा के लिए ख्यालनुमा विषय को चुना तो दृष्टि में ग्वालियर घराने से सम्बन्धित अन्य गायन शैलियाँ यथा मुण्डी ध्रुपद , टप्पख्याल भी आई। इनका उद्भव का स्त्रोत क्या है? इनके विस्तार अंग का क्या ढंग है। इनकों गाने वाले कलाकार है, या नही, इनकी बन्दिशें उपलब्ध है या नहीं इनकी लोकप्रियता के कम होने के क्या कारण हैं? इन्हीं प्रश्नों से उत्पन्न जिज्ञासा के समाधान हेतु शोधकत्री को इस विषय पर शोध करने की आवश्यकता प्रतीत हुई।

विषय कथन:

“ग्वालियर घराने की अल्पप्रचलित गायन शैलियों का अध्ययन।“

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण:

जब कोई भी शोधकत्री शोधकार्य करने के लिए किसी विषय का चयन करती है तो उसके सामने कई प्रश्न आ जाते हैं, जिनके उत्तर प्राप्त करने के लिए शोधकत्री अपने विषय से सम्बन्धित सामग्री जैसे:- पत्र-पत्रिकायें, लघु शोध प्रबन्ध, शोध प्रबन्ध, अभिलेखों व पुस्तकों का अध्ययन कर प्रश्नों के उत्तर पाती है। साथ ही यह भी देखती है कि शोधकत्री द्वारा चयनित विषय पर पूर्व में कितना काम हो चुका है, व इसके अन्तर्गत किस विधि का प्रयोग हुआ तथा उससे क्या निष्कर्ष निकला। पूर्व में किये गये यह शोध कार्य कहाँ तक उपयोगी सिद्ध हुये तथा अब आगे किस विषय पर शोधकार्य किया जा सकता है। इसी समस्या के निदान के लिए शोधकत्री द्वारा अपने शोध से सम्बन्धित कार्य का सर्वेक्षण किया गया है। जो कुछ इस प्रकार है।

शोध प्रबन्ध:-

नाम	**विषय**	**विश्वविद्यालय**
सहस्त्रबुद्धे स्मिता, 2019	ग्वालियर घराने की गायन परम्परा में टप्पा, ठुमरी एवम तराना गीत शैलियाँ एक अध्ययन	जीवाजी विश्वविद्यालय ग्वालियर
चतुर्वेदी रंजीता, 2001	ख्याल गायन शैली के उठान में घरानेदार स्त्री गायीकाओं का योगदान	क्षत्रपति शाहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर

गांधी नीरज, 2008	आधुनिक सन्दर्भ में ख्याल गायन शैली के स्वरूप का सैद्धान्तिक एवम व्यवहारिक अध्ययन	पंजाब विश्वविद्यालय
Chaphekar Swapnil 2021	An Analytical study of a singing style evolved through the confidence of Gwalior – agra, and Jaipur ghranas of Khayal Gayaki- with respect to specific vocalist	University of Mumbai
भारद्वाज ज्योति, 2007	बदलते परिवेश में घराना पद्धति की स्थिति और इसमें हो रहे परिवर्तनों का अध्ययन विशेषकर ग्वालियर घराना (गायन) के सन्दर्भ में।	दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा।
सक्सैना ऋतु, 2012	ग्वालियर घराने की संगीत शिक्षण पद्धति: प्रारम्भ से वर्तमान तक एक विश्लेषणात्मक अध्ययन।	दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा।
पाण्डेय रितु, 2012	वर्तमान सन्दर्भ में शास्त्रीय संगीत और प्रमुख जनसंचार माध्यम: एक समालोचनात्मक अध्ययन।	दयालबाग शिक्षण संस्थान (डीम्ड विश्वविद्यालय) दयालबाग, आगरा।

पत्र पत्रिकायें:-

- कृष्णराव शंकर पंडित, ग्वालियर की ख्याल गायन शैली, संगीत दिसम्बर 1969 से उद्धत किया गया।
- डा धोड़ म0 वि0 प्रबन्ध, ध्रुपद व ख्याल, संगीत कला बिहार 1975 अप्रैल से उद्धत किया गया है।
- जनवरी- फरवरी 1976, ख्याल अंक।
- अगस्त 1976, ख्याल और उसका विकास।
- सितम्बर 1976, ख्याल के विकास की पृष्ठभूमि और ख्याल शैली के पुनरूत्थान के उपाय।
- ख्याल का ग्वालियर घराना, जनवरी-फरवरी 1990
- मई 1977, ख्याल शैली की लोकप्रियता।
- नवम्बर 1977, ख्याल गायकी: ‘‘सही मूल्यों की तलाश‘‘

उपर्युक्त साहित्य के सर्वेक्षण के पश्चात् शोधकत्री को यह ज्ञात हुआ कि ग्वालियर घराने की अल्प प्रचलित गायन शैलियो पर पूर्व में कोई भी शोधकार्य नहीं हुआ है। अतः सम्बन्धित शोध की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुये शोधकत्री ने ग्वालियर घराने की अल्पप्रचलित गायन शैली (मुण्डी ध्रुपद , टप्पख्याल व ख्यालनुमा) का सांगीतिक अध्ययन करने हेतु इस विषय का चयन किया है।

अध्ययन के उद्देश्य:-

- ग्वालियर घराने का परिचयात्मक अध्ययन।
- ग्वालियर घराने की गायन शैलियों का अध्ययन।

- ❖ अल्पप्रचलित गायन शैलियों का विश्लेषणात्मक अध्ययन।
- ❖ अल्पप्रचलित शैलियों के अन्तर्गत मुण्डीध्रुपद , टप्पख्याल व ख्यानुमा की उत्पत्ति, विकास एवं विस्तार प्रक्रिया का अध्ययन।
- ❖ इन गायन शैलियों के अल्पप्रचलित होने के कारणों का अध्ययन।

विषय परिसीमांकन:-

शोधकत्री अपने शोध कार्य के अन्तर्गत विशेषतः तीन गायन शैलियाँ (मुण्डी ध्रुपद, टप्पख्याल, व ख्यालनुमा) का अध्ययन करेगी।

शोध के स्त्रोत:-

विषय से सम्बन्धित तथ्यों का संकलन, पुस्तकालयों, इन्टरनेट, दृश्य व श्रृव्य सामग्री संगीत जगत के कलाकारों व विद्वानों से विचार-विमर्श कर साक्षात्कार के माध्यम से किया जायेगा।

शोध का औचित्य:-

उत्तर भारतीय संगीत पद्धति में गायन की विविध अल्पप्रचलित गायन शैलियाँ मुण्डी ध्रुपद , टप्पख्याल व ख्यालनुमा आदि का सम्बन्ध ग्वालियर घराने से है। प्रस्तुत शोध प्रबन्ध से इन गायन शैलियों की विस्तृत जानकारी तो प्राप्त होगी ही साथ ही इनसे जुड़े विभिन्न पक्षों जैसे - राग प्रयोग, ताल प्रयोग , भाषा और साहित्य, रस, विशेष स्वरलगाव, विस्तार प्रक्रिया, विभिन्न प्रकार की रचनाएं आदि की जानकारी भी प्राप्त होगी जिसमें इन शैलियों के सौन्दर्यात्मक पक्षों को उजागर किया जा सकता है। जो संगीत विद्यार्थियों और जिज्ञासुओं के लिए सहायक होगा। इन अल्पप्रचलित गायन शैलियों से सम्बन्धित कलाकारों के विषय में जानकारी इस शोध के माध्यम से दी जा सकेगी। प्रस्तुत शैलियों से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी पुस्तकों एवम ग्रन्थों में प्राप्त नहीं होती है। अतः शोधकत्री ने विषय की उपयोगिता का अनुभव करते हुये अमुक विषय का चयन किया है।

अध्यायों का विभाजन:-

प्रथम अध्याय:- ख्याल गायन और घराना पद्धति।

द्वितीय अध्याय:- ख्याल गायन शैली के तत्व और विशेषतायें।

तृतीय अध्याय:- मुण्डी ध्रुपद

चतुर्थ अध्याय:- टप्पख्याल

पंचम अध्याय:- ख्यालनुमा ,

षष्ठम् अध्याय:-

(a) अप्रकाशित रचनाओं का संकलन।

(b) स्वनिर्मित रचनाएं

सप्तम् अध्याय:- निष्कर्ष।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- ❖ रातंजनकर, आचार्य श्रीकृष्ण नारायण, अभिनव गीत मंजरी, आचार्य एस.एन. रातजनकर फाउंडेशन दादर, मुम्बई।
- ❖ सुदीप्ता सेनगुप्त, ''ग्वालियर की संगीत परंपरा एवं ध्रुपद गायन शैली'' कनिष्क पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली।
- ❖ डॉ. शैलेन्द्र कुमार गोस्वामी, ''हिन्दुस्तानी संगीत के महान रचनाकार सदारंग - अदारंग'' कनिष्क पब्लिशर्स, डिस्ट्रव्यूटर्स, नई दिल्ली।
- ❖ डॉ. अरूण महादेवराव बांगरे ''ग्वालियर की संगीत परंपरा'' कनिष्क पब्लिशर्स डिस्ट्रीब्यूटर्स, नई दिल्ली।
- ❖ डॉ. दीपक शर्मा, ग्वालियर घराने की ख्याल गायकी वर्श 2014, राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड, दरियागंज, नई दिल्ली।

INTERNET WEBSITES :

- ❖ https://www.shodhganga.com
- ❖ https://www.allreasearchjournal.com
- ❖ https://satswargyah.in
- ❖ https://en.wikipedia.org
- ❖ https://hi.m.wikipedia.org